यूनिट–तृतीय
सामुदायिक सहभागिता
Unit-III
COMMUNITY ENGAGEMENT

सामुदायिक सहभागिता : विद्यालय, परिवार और सामुदायिक साझेदारी
[Community Engagement : School, Family and Community Parternship]

कार्य, पाठ्यचर्या की अभिन्न गतिविधि है, कोई अतिरिक्त पाठ्यचर्या या सह-पाठयचर्या नहीं। भारतीय समाज में बालकों को अपने घर, अभिभावकों के खेतों, दुकानों तथा अन्य कई स्थानों पर काम करना उनकी दिनचर्या का एक स्वाभाविक हिस्सा है। परिवार और पारिवारिक नैतिक, आर्थिक मूल्य पर आधारित विकास के आधार हैं। सभी को कार्य करना चाहिए, इससे समुदाय में विद्यालय की भागीदारी होती है तथा उच्चतर कक्षाओं में विद्यार्थी पास-पड़ौस की एजेंसियों और संगठनों में इटर्नशिप करके शिक्षा के साथ कमाई भी कर सकते हैं। बुवाई और कटाई के समय खेती के कामों में अभिभावकों की मदद करना भी एक शिक्षा है क्योंकि यह विज्ञान तथा सामाजिक शिक्षा, दोनों में मददगार होने के साथ ही श्रम की गरिमा को भी बढ़ाती है। घर और विद्यालय में विद्युत और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग ही नहीं, उनकी मरम्मत और रख-रखाव करने की शिक्षा भी कार्य-शिक्षा का जरूरी हिस्सा है। प्रभावी शिक्षा तभी संभव है जब विद्यालय, परिवार एवं समाज तीनों अपनी जिम्मेदादी निभायें।

विद्यालय में कार्य शिक्षा के लिए समुदाय का सहयोग लेने से पूर्व समुदाय की मान्यताओं पर विचार किया जाना आवश्यक है। समुदाय व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है, जिसमें व्यक्ति किसी विशेष स्थान पर रहते हैं तथा अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं और परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं। समुदाय की अवधारणा में निम्नलिखित परिस्थितियाँ शामिल हैं—

(1) समुदाय विभिन्न लोगों के जुड़ने से बनता है।
(2) सभी लोग किसी सर्वमान्य कारण से जुड़े हुए होते हैं।
(3) सभी लोग निश्चित लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयास करते है और अपना अनुभव बाँटते है।

महात्मा गाँधी ने विद्यालय और समुदाय को साथ लाने की आवश्यकता पर बल दिया था। उनके अनुसार अगर शिक्षा द्वारा नयी सामाजिक प्रणाली स्थापित करनी है तो विद्यालय और समुदाय अलग नहीं रह सकते। हम सभी जानते हैं कि शिक्षण प्रक्रिया को समृद्ध करने के लिए शिक्षक और पालकों को करीब आना चाहिए। समुदाय को बालकों की आवश्यकता की चिन्ता करनी चाहिए। किसी भी परिस्थिति में समाज को बच्चों के विकास और शैक्षणिक उपलब्धता की जिम्मेदारी केवल विद्यालय पर नहीं छोड़नी चाहिए।

उपरोक्त के आधार पर समुदाय सहभागिता को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है—

"समुदाय सहभागिता से तात्पर्य विद्यालय की सभी गतिविधियों में शैक्षिक उन्नयन के लिए समाज तथा परिवार की सहभागिता से है।"

सामुदायिक सभागिता एवं विद्यालय
(Community Engagement and School)

विद्यालय की समुदाय से साझेदारी में विद्यालय समुदाय से निम्नलिखित अपेक्षाएँ करता है—

(1) बालक रोज नियमित समय पर विद्यालय आयें।
(2) विद्यालय में शिक्षा-प्रक्रिया पर नजर रखने के लिए भागीदारी बढ़ाएं।

Scanned by CamScanner

(3) कार्य शिक्षा से संबंधित गतिविधियों के चयन के संबंध में सुझाव दें।

(4) समय-सारिणी में कार्य-शिक्षा का समय और उसकी आवश्यकता पर अपनी राय दें।

(5) कार्य शिक्षा प्रयोगशाला का गठन करने के लिए सक्रिय रूप से योगदान करें; जैसे—कार्य शिक्षा के लिए सामग्री और उपकरणों के क्रय-विक्रय में भागीदार बनें और उनके रखरखाव के बारे में सुझाव दें।

(6) गतिविधियों के आयोजन और प्रदर्शन में सहयोग दें। विद्यार्थियों के आंकलन एवं मूल्यांकन में सक्रिय भागीदारी निभाएं।

(7) अभिभावक तथा शिक्षक के बीच की दूरी को कम करने का प्रयास करें।

विद्यालय द्वारा निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती है; जैसे—

(1) कार्य शिक्षा में ऐसी क्रियाओं का चयन किया जा सकता है; जैसे—पानी के स्थानों की सफाई, गड्ढों को भरना, सामुदायिक बगीचे में बागवानी, कूड़े का प्रबंधन, बाल सभा का आयोजन और पूरे स्कूल की भागीदारी, अहिंसा और पर्यावरण से जुड़े विषय पर रंगमंच, नृत्य, संगीत और नाटक का आयोजन, ग्राम स्वच्छता, सफाई लोगों को स्वच्छता के बारे में बताना, पौधारोपण, भोजन और पोषिकता की जानकारी देना, लिंग समानता, सामाजिक न्याय, रूढ़िवादिता को समाप्त करने के प्रयास करना आदि।

(2) कामगारों का साक्षात्कार आयोजित किया जा सकता है न केवल उनको पहचान दिलाने के लिए बल्कि उनके मूल्यों को प्रोत्साहित करने के लिए।

(3) कितने बच्चे विद्यालय नहीं आ रहे हैं और कितने वयस्क अशिक्षित हैं यह जानने के लिए विद्यार्थियों से सर्वेक्षण कराया जा सकता है।

(4) प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों का संचालन किया जा सकता है।

(5) विद्यालय को अपना परिसर जनहित की शासकीय योजनाओं 'पल्स पोलियो' जैसे अभियान के लिए प्रदान करना चाहिए, साथ ही साथ अपने शिक्षकों और विद्यार्थियों का समर्थन और सहयोग भी इस प्रकार के अभियानों में प्रदान करना चाहिए।

(6) समाज में सामाजिक त्यौहारों के समय साज-सज्जा में भागीदारी करनी चाहिए।

(7) विद्यार्थियों को श्रम के महत्त्व से इस तरह से परिचित कराना चाहिए कि वे उसका आदर करें।

(8) विद्यालय को स्थानीय हस्तकला कार्य प्रदर्शनी के आयोजन में अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए।

(9) विद्यालय में सामाजिक संसाधनों, सामुदायिक संपत्तियों, विभिन्न योजनाओं, कार्यक्रमों और शिक्षा, स्वास्थ्य, कल्याण और कृषि से सम्बन्धित संस्थानों के स्वामित्व और प्रबंधन के लिए पंचायत प्रतिनिधियों की जिम्मेदारी, शक्ति और भूमिका की जानकारी से संबंधित कार्यक्रम होने चाहिएँ।

इस प्रकार कार्य आधारित सामुदायिक भागीदारी छात्रों में नागरिक भागीदारी की बौद्धिक समझ को विकसित करते हैं। छात्र स्थानीय समुदाय और संगठनात्मक समस्याओं और जरूरतों का विश्लेषण करके, रचनात्मक समाधान विकसित करना सीखते हैं।

सामुदायिक सहभागिता एवं परिवार
(Community and Family)

प्रायः यह देखा जाता है कि कार्य-शिक्षा के लिए समय-सारिणी में उपयुक्त समय निर्धारित किया जाता है। लेकिन प्रायोगिक तौर पर इसके लिए कोई कालांश आवंटित नहीं किया जाता। इस प्रकार कार्य-शिक्षा को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता। शिक्षकों के साथ परिवार/अभिभावकों का रवैया भी अत्यधिक निराशाजनक है।

उनके तर्क हैं—जब बच्चे शिक्षा के कार्य घर में पूरा कर सकते हैं तो विद्यालय में विद्यार्थियों का मूल्यवान समय क्यों बर्बाद किया जाए? विद्यालय का ध्यान केवल सीखने और सिखाने पर होना चाहिए। सम्भवतः अभिभावक शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया से अवगत नहीं हैं और वे पुस्तकीय ज्ञान को ही वास्तविक ज्ञान समझते हैं। इस परिदृश्य में यह कार्य-शिक्षा के शिक्षक का दायित्व है कि वे औपचारिक रूप से उन्मुखीकरण कार्यक्रमों का आयोजन करें, जिससे कि कार्य शिक्षा के महत्त्व को समझाया जा सके।

Scanned by CamScanner

किसी भी अकादमिक सत्र में अभिभावकों के सहयोग के लिए विद्यालय द्वारा निम्नलिखित रचनात्मक कार्यक्रमों को संचालित किया जा सकता है—

(1) अभिभावक-शिक्षक संघ बैठक (Parent-Teacher Association Meeting)—ग्रामीण और शहरी परिवेश के विद्यालयों में अभिभावक-शिक्षक संघ बनाए जा सकते हैं। नियमित तौर पर इस संघ की मीटिंग होनी चाहिए। अन्य महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं के साथ कार्य-शिक्षा के महत्त्व की भी चर्चा की जानी चाहिए। कार्य-शिक्षा के सही अर्थ को बताते हुए शिक्षक अभिभावकों की कार्य-शिक्षा के प्रति नकारात्मक सोच में बदलाव ला सकते हैं।

(2) माताओं की बैठक (Mother's Meeting)—बहुत से विद्यालयों में माताओं की मीटिंग होती है। चूँकि माताएँ बच्चों की शिक्षा से सतत जुड़ी रहती हैं। इसलिए माताओं के क्लब का गठन करके और शिक्षा के मुद्दे पर चर्चा करके शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ायी जा सकती है? माताओं के क्लब के माध्यम से समुदाय को कार्य-शिक्षा के महत्त्व से परिचित कराया जा सकता है। यदि किसी विद्यालय में पिताओं का क्लब है तो शिक्षक अपने लक्ष्य उनके द्वारा पूरे कर सकते हैं।

(3) गृह भेंट/गृह सम्पर्क (Home Contacts)—सामान्य छोटे शहरों में और एक ही पाली में लगने वाली पाठशालाओं के शिक्षक बच्चों की प्रगति के बारे में बताने के लिए घरों पर जा सकते हैं, बड़े शहरों के परिवेश में ऐसा संपर्क कम ही बनता है।

(4) अनौपचारिक मीटिंग (Informal Meetings)—शिक्षक अनौपचारिक रूप से मिलकर भी अपने विचार रख सकते हैं। संवाद इतना सशक्त हो कि पालक कार्य-शिक्षा के महत्त्व को समझ सकें। इस प्रकार ग्रामीण और शहरी परिवेश में ऐसे बहुत से संसाधन हैं जिनका उपयोग अभिभावक कार्य-शिक्षा से संबंधित क्रियाकलापों के आयोजन, समन्वय तथा संवर्धन के लिए कर सकते हैं।

(5) अभिभावकों के विचार (Parents Thought)—कुछ बच्चों के अभिभावक, विषय-वस्तु, भाषा, सामाजिक, कला आदि के बारे में अपने विचार दे सकते हैं, इससे उन्हें गर्व होगा। इसके लिए अभिभावकों का शिक्षित होना आवश्यक नहीं है। अशिक्षित अभिभावक भी अधिगम प्रक्रिया में अपना सहयोग दे सकते हैं।

(6) बालकों से सम्बन्धित सूचनाएँ (Informal Regarding Children)—अभिभावकों और छात्रों को उनकी प्रगति के बारे में सूचना देना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इससे विद्यार्थियों की रुचियाँ, योग्यता आदि के बारे में अभिभावकों को पता चलता है।

इस प्रकार समुदाय तथा विद्यालय के समन्वय से हम वैश्विक नागरिकता के लिए तैयार हो जाते हैं।

सामुदायिक सहभागिता तथा सामुदायिक साझेदारी
(Community Engagement and Community Partnership)

छात्र, संकाय, समुदाय, परिवार सभी लोग मिलकर एक विस्तृत शृंखला बनाते हैं। सामुदायिक साझेदारी से छात्र नेटवर्किंग, संघर्ष समाधान, सर्वसम्मति निर्माण, वार्ता कौशल, संबंधों को सुविधाजनक बनाने और स्थानीय समुदाय-निर्माण प्रक्रियाओं का समर्थन करना सीखते हैं और उसका अभ्यास करते हैं। समुदाय की प्रगति में विद्यालय महत्त्वपूर्ण योगदान देता है और समुदाय को भी विद्यालय की जरूरतों, आशाओं और उम्मीदों की भी जानकारी होनी चाहिए। समुदाय को विद्यालय के लोकाचार और आशाओं के बारे में सभी हितधारकों से स्पष्ट तौर पर वार्ता करनी चाहिए। विशेषरूप से अभिभावकों का विद्यालय में स्वागत करके, बालकों की शिक्षा में उन्हें भागीदार के रूप में स्वीकार करके।

अन्य विद्यालय और NGOS के साथ भागीदारी से भी मदद मिल सकती है। स्थानीय संस्कृति का यदि सूक्ष्मता से अध्ययन किया जाये तो यह अधिगम के अन्य क्षेत्र को प्रदर्शित करता है जो संस्थानात्मक ज्ञान का आधार हो सकता है। स्थानीय इतिहास, इसकी लोक परंपरायें, कला शिल्प आदि की विशाल शैक्षिक संभावनायें हैं और जो शिक्षक द्वारा शिक्षण-अधिगम क्रिया को अधिक आनंदपूर्ण बनाने में प्रयुक्त हो सकती हैं, इसके लिए सामुदायिक साझेदारी को समझना आवश्यक है।

Scanned by CamScanner

सामुदायिक साझेदारी के सूचक
(Indicators of Community Parternship)

(1) समुदाय एवं विद्यालय के बीच लेन-देन का संबंध स्थापित होता है।

(2) आपातकाल में समुदाय के द्वारा विद्यालय की देखभाल होती है।

(3) विद्यालय की सम्पूर्ण गतिविधियों में समुदाय की सहभागिता।

(4) विद्यालय की शिक्षण-अधिगम गतिविधियों, निर्णय निर्माण गतिविधियों के स्थानान्तरण और सम्पूर्ण गुणात्मक एवं मात्रात्मक पहलु में समुदाय सम्मिलित रहता है।

सामुदायिक साझेदारी—स्थानीय समुदाय साझेदारी के मुख्य लक्ष्य इस प्रकार हैं—

(1) कार्य शिक्षा में स्थानीय समुदाय की भागीदारी की अवधारणा को समझना।

(2) विभिन्न पृष्ठभूमि और व्यवसायों से आने वाले बच्चों की परिस्थिति को समझना।

(3) स्कूल शिक्षा कार्यक्रमों और नीतियों को जानना, जिसमें स्थानीय सामुदायिक साझेदारी के पहलू शामिल हैं।

(4) स्थानीय सामुदायिक साझेदारी के रचनात्मक दृष्टिकोण से परंपरागत दृष्टिकोण के बीच का अंतर समझना।

(5) स्थानीय समुदाय सेवा में प्रभावी ढंग से भाग लेना।

(6) पारंपरिक व्यवसायों में बढ़ावा देने के लिए गुप्त प्रतिभाएँ खोजना।

(7) प्रासंगिक रूप से उपयुक्त भागीदारी पूर्ण गतिविधियों का निर्माण करना।

(8) उद्यमियों को विकसित करने के लिए साक्षरता, प्रौद्योगिकी एकीकरण और अनुसंधान के साथ स्थानीय व्यवसायों को बढ़ावा देना।

कार्य शिक्षा में स्थानीय समुदाय के साथ भागीदारी आवश्यक है। कार्य-शिक्षा में छात्रों को आवश्यक कौशल से लैस किया जाना होगा। इस प्रक्रिया से उनमें सहानुभूति और करुणा का भाव उत्पन्न होगा और उनकी स्थानीय समुदाय के जीवन के प्रति कटिबद्धता बढ़ेगी।

सामुदायिक साझेदारी के प्रमुख क्षेत्र
(Main Fields of Community Partnership)

सामुदायिक साझेदारी एक अंतर्विषयक है और दोनों शिक्षक के माध्यम से योगदान देते हैं। इसके प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं—

(1) स्कूल-समुदाय कार्यशालाओं और स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन और सुविधा प्रदान करना।

(2) स्कूल-गाँव की स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं, स्कूल-गाँव की जल निकासी प्रणाली और स्कूली छात्रों-ग्रामीणों की स्वास्थ्य संबंधी आदतों का अध्ययन और संबंधित प्राधिकारियों को उसकी रिपोर्टिंग करना।

(3) विद्यालय-समुदाय भागीदारी के साथ वनमहोत्सव को बढ़ावा देना और उसमें भागीदारी करना, एक उत्सव के रूप में पेड़ों और पौधों के रोपण के बारे में जागरूकता पैदा करना।

(4) गाँवों में छात्रों की मदद से जलवायु परिवर्तन और उसके खतरों पर जागरूकता पैदा करना।

(5) स्वच्छता, पानी, मिट्टी उर्वरता प्रबंधन, बायोमास, ऊर्जा और सौर ऊर्जा उत्पादन के साधनों से संबंधित जागरूकता कार्यक्रमों में अध्ययन करने और भाग लेने के लिए सार्वजनिक स्थानों और खेतों का दौरा करना।

(6) छात्रों के लिए गाँव में स्कूल शिक्षा समिति के सदस्यों के अनुकूलन में भाग लेना।

(7) पड़ौस के चयनित गाँवों में गतिविधि और कार्य आधारित शिक्षा कार्यक्रमों में छात्रों को शामिल करना।

(8) वयस्क साक्षरता, विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देना।

(9) विद्यालय सुविधाओं और कार्यक्रमों के निर्माण और रख-रखाव के लिए सामुदायिक नेताओं के साथ संबंध बनाना और सम्पर्क करना।

(10) गुणवत्ता परिणामों के लिए आपूर्तिकर्ताओं का प्रतिधारण सुनिश्चित करने, पड़ौस में अभिभावकों के व्यापारों और व्यवसायों में रुचि लेना और उससे सीखना।

Scanned by CamScanner

(11) उद्यमियों को विकसित करने के लिए साक्षरता, प्रौद्योगिकी एकीकरण और अनुसंधान के साथ स्थानीय व्यवसाओं को बढ़ावा देना।

(12) निम्नलिखित गतिविधियों में सक्रिय साझेदारी—

(क) टीकाकरण अभियान,

(ख) स्वास्थ्य जाँचे,

(ग) महामारी नियन्त्रण,

(घ) प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लिए हस्तक्षेप,

(ङ) विकलांगों के लिए समर्थन,

(च) स्थानीय लोग गीतों, लोक कथायें, पहेलियाँ,

(छ) खिलौनों का संकलन,

(ज) बाल-अधिकार और शिक्षा कार्यक्रम का अधिकार,

(झ) आपदाओं, दंगों, हिंसा की घटनाओं (विशेष रूप से महिलाओं, बच्चों के खिलाफ), दुर्घटनाओं और अन्य गड़बड़ी का अध्ययन और इसमें राहत प्रदान करना।

इस प्रकार सामुदायिक साझेदारी माता-पिता, शिक्षक, विद्यालय एवं स्थानीय समुदाय से बनती है। यह स्वाभाविक ही है कि किसी भी सफल सुधार रणनीति में स्थानीय समुदाय सर्वोपरि भूमिका निभाता है (संरचनात्मक एवं कार्यात्मक दोनों सामुदायिक लक्षण एक समुदाय से संबंद्ध बच्चों की शिक्षा प्रक्रिया में बाधाओं के रूप में या सुसाधकों के रूप में कार्य कर सकते हैं। इन कारकों की समझ शैक्षिक कार्यक्रमों और विद्यालयों में योजनाओं के विकास पर शिक्षा के प्रभाव को अधिकतम करता है।

●●●

Scanned by CamScanner